



# भारत का राजपत्र

## The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग III—खण्ड 4

PART III—Section 4

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 155 ]

नई दिल्ली, शनिवार, दिसम्बर 23, 2000/पौष 2, 1922

No. 155]

NEW DELHI, SATURDAY, DECEMBER 23, 2000/PAUSA 2, 1922

बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण

( जीवन बीमा-पुनर्बीमा ) विनियम, 2000

अधिसूचना

नई दिल्ली, 22 दिसम्बर, 2000

फा. सं. आई आर डी ए/आर ई जी/12/2000.—प्राधिकरण, बीमा विनियमक और विकास प्राधिकरण अधिनियम, 1999 की धारा 14 और 26 के साथ परिव बीमा अधिनियम, 1938 की धारा 114क द्वारा प्रादत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, बीमा सलाहकार समिति के परामर्श से निम्नलिखित विनियम बनाता है, अर्थात् :—

1. संक्षिप्त नाम और प्रारंभ—(1) इन विनियमों का संक्षिप्त नाम बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (जीवन बीमा पुनर्बीमा) विनियम, 2000 है।
- (2) ये राजपत्र में अधिसूचना की तारीख को प्रवृत्त होंगे।
2. परिभाषा—इन विनियमों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो,—
  - (क) "अधिनियम से बीमा अधिनियम, 1938 (1938 का 4) अभिप्रेत है;
  - (ख) "प्राधिकरण" से बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण अधिनियम, 1999 (1999 का 41) की धारा 3 को उपधारा (1) के अधीन स्थापित बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण अभिप्रेत है;
  - (ग) "प्रतिधारण" से जोखिम की वह रकम अभिप्रेत है, जिसे बीमाकर्ता अपने स्वयं के लेखा के लिए ग्रहण करता है;
  - (घ) इन विनियमों में प्रयुक्त किन्तु परिभाषित न किए गए शब्दों और पदों का वही अर्थ होगा, जो उनका क्रमशः बीमा अधिनियम, 1938 (1938 का 4) या बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण अधिनियम, 1999 (1999 का 41) में उनका है।

3. पुनर्बीमा की व्यवस्थाओं के लिए अनुसारित की जाने वाली प्रक्रिया—(1) प्रत्येक जीवन बीमाकर्ता उसके द्वारा समावेश किए जीवनों के संबंध में पुनर्बीमा का एक कार्यक्रम बनाएगा।

(2) ऐसे कार्यक्रम का विस्तृत वर्णन, जिसमें उस पुनर्बीमाकर्ता(ओं) का/के नाम समिलित होगा (होंगे) जिस के साथ बीमाकर्ता का कारबार रखने का प्रस्ताव है, बीमाकर्ता द्वारा प्रत्येक वित्तीय वर्ष के प्रारंभ के क्रम से क्रम पैतालीस दिन पूर्व प्राधिकरण के पास फाइल करना होगा :

परन्तु प्राधिकरण, यदि वह आवश्यक समझता है तो बीमाकर्ता से समय-समय पर कोई अतिरिक्त जानकारी ले सकेगा और बीमाकर्ता तत्काल प्राधिकरण को उसे प्रस्तुत करेगा।

(3) प्राधिकरण उपविनियम (2) में यथा निर्दिष्ट पुनर्बीमा के ऐसे किसी कार्यक्रम की संविक्षा करेगा और यदि वह आवश्यक समझता है तो उसमें परिवर्तनों के सुझाव देगा तथा बीमाकर्ता अपने कार्यक्रम में तत्काल ऐसे परिवर्तनों को समिलित करेगा।

(4) प्रत्येक बीमाकर्ता अपनी वित्तीय सामर्थ्य और कारबार के परिमाण के अनुरूप भारत में अर्जित अधिकतम प्रीमियम को प्रतिधारित रखेगा।

(5) बीमाकर्ता द्वारा चुना गया पुनर्बीमाकर्ता, स्टेंडर्ड एंड पुअर की बी बी की न्यूनतम की विश्वसनीयता रेटिंग या किसी अन्तरराष्ट्रीय रेटिंग अभिकरण की समतुल्य रेटिंग बनाए रखेगा :

परन्तु बीमाकर्ता द्वारा किसी अन्य पुनर्बीमाकर्ता के साथ कारबार कर रखना प्राधिकरण के पूर्व अनुमोदन से होगा :

परन्तु यह और कि पुनर्बीमा का कोई भी कार्यक्रम मूल प्रीमियम के आधार पर नहीं होगा, जब तक कि प्राधिकरण ऐसे कार्यक्रम को अनुमोदित नहीं करता है :

परन्तु यह और कि कोई भी जीवन बीमाकर्ता अपनी संप्रबंधित कंपनी या उसके सहयुक्त/समूह कंपनी के साथ उन निबंधों के सिवाय पुनर्बीमा संधि-ठहराव नहीं करेगा, जो बाजार में वाणिज्यिक रूप से प्रतियोगी हों और प्राधिकरण के पूर्व अनुमोदन से हों, जो अंतिम और आबद्धकर होगा।

(6) प्रत्येक बीमाकर्ता प्राधिकरण को अपने व्यार्थिक लेखाओं सहित अपने पुनर्बीमा संव्यवहारों के संबंध आंकड़े ऐसे प्ररूप में प्रस्तुत करेगा, जो वह विनिर्दिष्ट करें।

4. आवक पुनर्बीमा कारबार—(1) प्रत्येक बीमाकर्ता, जो आवक पुनर्बीमा कारबार का बीमा करना चाहता है, आवक पुनर्बीमा कारबार का बीमा करने के लिए सुपरिभाषित बीमा करने की नीति अपनाएगा।

(2) बीमाकर्ता यह सुनिश्चित करेगा कि पुनर्बीमा कारबार को स्वीकार करने पर विनिश्चय पर्याप्त ज्ञान और अनुभव वाले व्यक्तियों द्वारा, अधिमानतः बीमाकर्ता के नियत बीमांकक के परामर्श से, किया जाएगा।

(3) बीमाकर्ता प्राधिकरण के पास प्रत्येक वित्तीय वर्ष के प्रारंभ से क्रम से क्रम पैतालीस पूर्व अपनी बीमा नीति पर एक टिप्पण, जिसमें कारबार के वर्ग, भौगोलिक सीमा, बीमा कारबार सीमाएं और लाभ के उद्देश्य, उपदर्शित हों, फाइल करेगा।

(4) बीमाकर्ता उपविनियम (3) में निर्दिष्ट टिप्पण में किन्हीं परिवर्तनों को भी फाइल करेगा, जब कभी कोई परिवर्तन बीमा कारबार नीति में किया जाता है।

[विज्ञापन/3/4/असा./161/2000]

एन. रंगाचारी, अध्यक्ष

## INSURANCE REGULATORY AND DEVELOPMENT AUTHORITY

## (Life Insurance-Reinsurance) Regulations, 2000

## NOTIFICATION

New Delhi, the 22nd December, 2000

**F. No. IRDA/REG/12/2000.**—In exercise of the powers conferred by section 114A of the Insurance Act, 1938, read with sections 14 and 26 of the Insurance Regulatory and Development Authority Act, 1999, the Authority, in consultation with the Insurance Advisory Committee hereby makes the following regulations, namely:

**1. Short title and commencement.**—(1) These regulations may be called the Insurance Regulatory and Development Authority (Life Insurance - Reinsurance) Regulations, 2000.

(2) They shall come into force on the date of their notification in the Official Gazette.

**2. Definitions.** ---In these regulations, unless the context otherwise requires:

- (a) 'Act' means the Insurance Act 1938 (4 of 1938);
- (b) 'Authority' means the Insurance Regulatory and Development Authority established under sub-section (1) of Section 3 of the Insurance Regulatory and Development Authority Act 1999 (41 of 1999);
- (c) 'retention' means the amount of risk which an insurer assumes for his own account.
- (d) Words and expressions used and not defined in these regulations but defined in the Insurance Act, 1938 (4 of 1938) or Insurance Regulatory and Development Authority Act, 1999 (41 of 1999), shall have the meanings respectively assigned to them in those Acts as the case may be.

**3. Procedure to be followed for reinsurance arrangements.**---(1) Every life insurer shall draw up a programme of reinsurance in respect of lives covered by him.

(2) The profile of such a programme, duly certified by the Appointed Actuary, which shall include the name(s) of the reinsurer(s) with whom the insurer proposes to place business, shall be filed with the Authority, at least forty five days before the commencement of each financial year, by the insurer.

Provided that the Authority may, if it considers necessary, elicit from the insurer any additional information, from time to time, and the insurer shall furnish the same to the Authority forthwith.

- (3) The Authority shall scrutinise such a programme of reinsurance as referred to in sub-regulation (2), and may suggest changes, if it consider necessary, and the insurer shall incorporate such changes forthwith in his programme.
- (4) Every insurer shall retain the maximum premium earned in India commensurate with his financial strength and volume of business.

(5) The reinsurer, chosen by the insurer, shall enjoy a credit rating of a minimum of BBB of Standard and Poor or equivalent rating of any international rating agency:

Provided that placement of business by the insurer with any other reinsurer shall be with the prior approval of the Authority.

Provided further that no programme of reinsurance shall be on original premium basis unless the Authority approves such programme.

Provided further that no life insurer shall have reinsurance treaty arrangement with its promoter company or its associate/group company, except on terms which are commercially competitive in the market and with the prior approval of the Authority, which shall be final and binding.

(6) Every insurer shall submit to the Authority statistics relating to its reinsurance transactions in such forms as it may specify, together with its annual accounts.

**4. Inward Reinsurance Business.**—(1) Every insurer who wants to write inward reinsurance business shall adopt a well-defined underwriting policy for underwriting inward reinsurance business.

(2) An insurer shall ensure that decisions on acceptance of reinsurance business are made by persons with adequate knowledge and experience, preferably in consultation with the insurer's appointed actuary.

(3) An insurer shall file with the Authority, at least forty five days before the commencement of each financial year, a note on its underwriting policy indicating the classes of business, geographical scope, underwriting limits and profit objective.

(4) An insurer shall also file any changes to the note referred to in sub-regulation (3) as and when a change in underwriting policy is made.

[ADVT/3/4/Exty/161/2000]

N. RANGACHARY, CHAIRPERSON